शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

धर्म और संगीत : एक दूसरे के पूरक

प्राप्तिः 27.02.2022
स्वीकृतः 16.03.2022

डॉ० संगीता गौरंग
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग
के०वी०ए० डी०ए०वी० कॉलेज फॉर वुमन
करनाल, हरियाणा
ईमेलः *sangeetagorang@gmail.com*

सारांश

भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श भावभूमि पर प्रवाहित होती रही है यदि हम भारतीय संस्कृति के किसी भी पक्ष का अध्ययन करें तो हम धर्म से अनुप्रणित पायेंगे। संगीत भी भारतीय विचारधारा की इस विशेषता से पूर्णतया प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है। यदि हम यूं कहें कि संगीत मानव जीवन में इस प्रकार समाविष्ट हो गया है कि प्रसंग वश अनायास ही जैन आगम हो, बौद्ध ग्रन्थ हो, मनु का स्मृतिग्रन्थ हो, या कौटिल्य का अर्थशास्त्र ही क्यों न हो। संगीत सार्वभोम अविरल गतिमान और सर्वसुखान्त है। उसका जन्म मानव के साथ हुआ है। उसका विकास समाज के संस्कार से हुआ है और उसका उत्कर्ष विश्व सभ्यता का मानव सूचकांक है। भारतीय संगीत के तीनों अंगों (गीत, वाद्य तथा नृत्य) की उत्पत्ति का उद्गम स्थान धर्म को बताया गया है और प्रायः सभी वाद्यों को प्रायः किसी न किसी देवता से जोड़ा गया है।

यह कहना अनुचित न होगा कि संगीत और धर्म का सम्बन्ध चोली और दामन जैसा है। मनुष्य इसकी स्वर लहरियों में खोकर भगवान में पूर्णतः लीन हो जाता है। चाहे मनुष्य कितनी भी परेशानियों में क्यों न घिरा हो, वह सांगीतिक ध्वनि के शीतल, पावन स्पर्श को पाकर उसके हृदय से कुलशित वेदनाएं क्षण भर में विरोहित हो जाती है।

वर्तमान युग में वैदिक संगीत की अपेक्षा भक्ति संगीत अधिक प्रचलित है। इसका कारण यह है कि भक्ति संगीत का काव्य भण्डार, सरस एंव सरल है जिसके द्वारा साधारण से साधारण जनता भी आनन्दानुभूति का आभास कर सकती है। भक्ति काव्य में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। कई सन्त भक्तों ने जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं – वल्लभ, चेतन्य, सूरदास, मीरा, तुलसीदास, पुरंदरदास, त्यागराग, तुकाराम, हरिदास, जयदेव, नानक, विद्यापति इत्यादि ने स्वर और शब्द की चेतना शक्ति से भी भगवान का अनन्य प्रेम उपलब्ध किया तथा जगत को सत्य का संदेश दिया।

धर्म

धर्म क्या है? – इसका स्पष्ट उत्तर देना या इसे विलग कर उसकी व्याख्या करना अत्यन्त ही मुश्किल कार्य है। धर्म एक बहुत ही व्यापकशब्द है। विभिन्न अवस्थाओं में धर्म का अर्थ विभिन्न रुपों में परिवर्तित होता रहता है – पदार्थ मात्र का वह प्राकृतिक तथा मूलगुण, विशेषता या वृति, जो उसमें बराबर स्थायी रुप में वर्तमान रहती हो, जिससे उसकी पहचान होती हो और उससे कभी अलग न की जा सकती हो जैसे – आग का धर्म जलना और जलाना या जीव का

धर्म जन्म लेना और मरना है।[1] सामाजिक क्षेत्र में नियम, विधि, व्यवहार आदि के आधार पर नियत तथा निश्चित वे सब काम या बातें, जिनका पालन समाज के अस्तित्व या स्थिति के लिये आवश्यक होता है और जो प्रायः सर्वत्र सर्विक रुप से मान्य होती है जैसे – अहिंसा, दया, न्याय, सत्यता आदि का आवरण मनुष्य मात्र का धर्म है।[2]

लौकिक क्षेत्र में वे सब कर्म तथा कर्तव्य, जिनका आवरण या पालन किसी विशिष्ट स्थिति के लिये विरोहित हो। जैसे – माता–पिता की सेवा करना पुत्र का धर्म है। पढ़ना–लिखना, यज्ञ आदि करना, किसी समय ब्राह्मणों का मुख्य धर्म माना जाता है। कर्तव्य शब्द से व्यवहृत धर्म का अर्थ उत्तरदायित्व से है जैसे एक मां का धर्म है सन्तान पालन करना। ठीक उसी प्रकार धर्म मनुष्य को उसके उत्तरदायित्व से अवगत कराता है और विधि के विधान की तरह उसका उत्तरदायित्व करता है हमें अपने नैतिक पथ पर अडिग रहने का संदेश देता है।

संगीत

संगीत उस नैसर्गिक और सनातन भाषा का नाम है जिसके माध्यम से समस्त प्राणी वर्ग समयानुरुप अपने हृदय के गुप्त और अव्यक्त भावों को हाव, भाव और कंठस्वर द्वारा सम श्रेणी के प्राणियों में अनायास व्यक्त व वितरित किया करते है। सभी प्राणियों को इस निर्विकार भाषा का बोध जन्म से ही संस्कार के रुप में अनायास प्राप्त है जो सभी प्रकार के मानवीय बंधनों से युक्त होते हुए भी एक महान् आकर्षण–शक्ति को लिये रहता है जिससे इसकी सर्वव्यापकता का अनुभव सभी अनुरागी पग–पग में किया करते हैं। संगीत की उत्पत्ति का आधार नाद या ध्वनि है। नाद के बिना संगीत का अस्तित्व नहीं है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित पंक्तियाँ ध्यानाकर्षक हैः–

"न नादेन बिना गीतं ना नादेन बिना स्वरः
न नादेन बिना नृतं तस्मान्नादात्मकं जगत्।।" [3]

हमारी अन्तरात्मा या चेतना का सीधा सम्बन्ध उस नाद ब्रह्मा से होना स्वाभाविक ही रहा है क्योंकि आत्मा को परमात्मा का अंश माना गया है। यह नाद ब्रम्ह्य ही संगीत का रुप धारण कर हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। सम्पूर्ण जगत नादाधीन है। इस बात की पुष्टि हम इस प्रकार से कर सकते है–

"नकारं प्रांणनामानं दकारमलंन बिंदुः
जगतः प्राणग्नि संयोगात्तेन नादो मिधीयते।।" [4]

नकार अर्थात् प्राणवाचक (वायुवाचक) और दकार अर्थात् अग्निवाचक है, अतः जो वायु और अग्नि के योग से उत्पन्न होता है, उसी को नाद कहते हैं। जगत् का समस्त व्यवहार नाद पर आधारित है। नाद का सामान्य अर्थ है आवाज़। नाद के योग से ही वर्णोच्चार होता है। वर्ण से पद (शब्द) की सिद्धि होती है पद से भाषा होती हैं तथा भाषा के होने से ही जगत के सब व्यवहार चलते है अतः सम्पूर्ण जगत ही नादाधीन है। संगीत का उद्‌गम स्थल भी नाद ही है। नाद संगीत में विभिन्न रुप धारण करके संगीत को रमणीयत प्रदान करता है। संगीत में नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर तथा स्वरों से रागोत्पत्ति होती है अतः कहा जा सकता हैं कि नाद ही संगीत का आधार है।

संगीत के शब्दिक अर्थ के संदर्भ में कहा गया है कि "मधुर ध्वनियों या स्वरों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार और कुछ विशिष्ट लयों में होने वाले प्रस्फुटन को ही संगीत कहते हैं।[5]

धर्म और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध

संगीत की दृष्टि में धर्म व्यापक भी है और सीमित भी। इस अदृश्यशक्ति की खोज का एकमात्र साधन ही संगीत है। धर्म ईश्वर से जुड़ा है और संगीत प्रत्येक सामाजिक प्राणी के कण–कण में ईश्वर की तरह बैठा हुआ है। धर्म सत्य की खोज है तो संगीत आनन्द की अनुभूति। आनन्द ईश्वर का स्वरुप है। भारतीय मनीषियों ने सदैव ही मुक्त कण्ठ से इस कला का यशोगान किया है क्योंकि ये चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति संगीत द्वारा सहज ही हो सकती है।

"वीणावादनतत्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्ग प्रयच्छति" [6]

भक्ति मार्ग में, संगीत के साथ भगवद्भजन करने से मन शीघ्र ही ईश्वर के नामरुप में लीन हो जाता है। संगीत समस्त जीव समूह को आनन्द का वरदान देकर अपनी ओर खींच लेता है।

"पशुर्वेति शिशुर्वेति गानरस फणी" [7]

अतः हम कह सकते हैं कि संगीत ही ऐसा एक मात्र साधन है जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारो पुरुषार्थ मिलते हैं। भगवद्भजन से धर्म, राजाओं और प्रभुओं से मिले हुये सम्मान के रुप में अर्थ से काम और ईश्वर प्रसाद के फलस्वरुप मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ईश्वर की उपासना करना प्रत्येक धर्म की वृत्ति है और प्रत्येक धर्म ने संगीत को ईश्वरोपासना का सशक्त माध्यम माना है। हमारे देश में विभिन्न भाषाओं के एवं धर्मो के लोग रहते हैं जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी आदि–आदि। इन सब धर्मो में संगीत की प्रधानता एंव महत्वता को स्पश्त्तयः संगीतबद्ध है। प्रत्येक धर्म में संगीत इस तरह से समाया हुआ है कि धर्म को हम संगीत से कदापि अलग नहीं कर सकते। जैसे मुस्लिम धर्म में नमाज़ पढ़ने से पूर्व मौला द्वारा दी जाने वाली अजान "अल्ला हो अकबर" एक भक्ति भावना पूर्ण आवाज़ है जो पूर्ण रुप से गेय है। इसके अतिरिक्त सूफी संतो ने भी अपनी उपासना में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सिख धर्म के गुरुद्वारों में जो प्रार्थनायें की जाती हैं वे भी संगीतिक हैं। इसी प्रकार ईसाई धर्म में भी गिरजाघरों में की जाने वाले करुणामयी प्रार्थनाएं ईसाई धर्म में संगीत की महत्वता को स्पष्ट बताती हैं अतः ईश्वरोपासना के लिए सबसे ज्यादा सबल और पवित्र साधन संगीत है। प्रत्येक धर्म की धरोहर संगीत है, इसलिये संगीत को हम धर्म से अलग नहीं कर सकते।

भारतीय संगीत का धर्म के साथ सम्बन्ध आदिकाल से ही स्थापित है। संगीत के आदि विद्वानों ने, शास्त्रवेताओं ने संगीत को नाद वेद की संज्ञा देकर उसकी उत्पत्ति सृष्टि कर्त्ता ब्रम्ह्य जी द्वारा बताई है। भारतीय संगीत के तीन अंग गायन, वादन व नृत्य इन तीन जगत की जननी गौरी को स्वर्ग सिहांसन पर सुशोभित कराकर प्रदोश के समय शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सब देवता उन्हें घेरकर खड़े हो गये और उनकी स्तुति करने लगे। सरस्वती ने वीणा, इन्द्र ने वेणु, ब्रम्ह्य ने करताल बजाना प्रारम्भ किया। लक्ष्मी जी ने गाना गाया और विष्णु भगवान मृदंग बजाने लगे। इस नृत्यमय संगीतोत्सव को देखने के लिये गन्धर्व, यज्ञ, पतंग, उरग, सिद्ध, साध्य, विधाधर, देवता व अप्सरायें आदि सभी उपस्थित थे।[8]

एक अन्य किवदन्ति के अनुसार पार्वती जी की शयन मुद्रा को देखकर शिवाजी ने उनके अंग प्रत्यंगों के आधार पर "रुद्रवीणा" की रचना की और अपने पांच मुखों से पंच रागों की उत्पत्ति की। तत्पश्चात् छठा राग पार्वती जी के श्री मुख से उत्पन्न हुआ। शिव ने भैरव, हिण्डोल, मेघ, दीपक और श्रीराम बनाये और छठे राग कौशिक की उत्पत्ति पार्वती जी ने की।

एक अन्य उदाहरण जिसमें शब्द, स्वर, ताल एवं छन्द का अनूठा सामजंस्य हैं। यह शिवताण्डव स्त्रोतम् हैं। जिसकी रचना रावण द्वारा शिव की आराधना करते समय हुई।

"जटाटविगल्लजलः प्रवाहपावितस्थले
गलेऽवल्म्ब्यलम्बितां भुजंगतुंगमालिकाम्
डमड्डमड्डमनिनादवड्डमर्वयं
चकार चंडतांडव तनोतु नः शिवः शिवम्" [१]

यह शिवताण्डव स्तोत्र इस प्रकार से शब्द स्वर, ताल एंव छन्द में एकरुप हैं कि इसमें संगीत का मीठा आभास होता है।

हिन्दू धर्म में जितने भी संस्कार माने जाते हैं वे सभी धर्म और संगीत से ओत–प्रोत है जैसे जन्म, नामकरण, जडू–ला, यज्ञोपवीत, सगाई, विवाह एंव मृत्यु इत्यादि ये सभी संस्कार संगीतिक है। हमारे जितने भी उत्सव, पर्व, व्रत, त्यौहार हो सबमें संगीत की प्रधानता देखने को मिलती है। जैसे गणगौर, होली, तीज आदि। इस प्रकार मनुष्य ने जन्म लेते ही संगीत की सुमधुर ध्वनि को सुना और मृत्यु होने पर भी "राम नाम सत्य हैं" की एक मुख ध्वनि के साथ उसका पंचतत्वों से बना हुआ शरीर पुनः पंचतत्वों में लीन हो गया।

अतः संगीत साधना का पूरक स्वरुप गायन शैलियों में से भजन और कीर्तन ही है। संगीत की अबोध शक्ति के आगे कौन नतमस्तक नहीं होता। यह भी सत्य है कि जहां भगवान के भक्त गायन करते हैं वहीं उसका मन भी रमता है।

उपयुक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि संगीत ईश्वर प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम है। विद्वानों ने संगीत कला को केवल कला ही नहीं अपितु उपासना की पद्धति भी माना है। ये पूर्णतया सत्य प्रतीत होता है कि आज भी ईश्वराराधना में संगीत की महत्वता ज्यों की त्यों बनी हुई है अतः हम यह कह सकते हैं कि संगीत धर्म का पूरक है।

सहायक ग्रन्थ सूची

- मानक हिन्दी कोश, सम्पादक रामचन्द्र वर्मा भाग – 3,
- भारतीय धर्म और दर्शन, आचार्य बलदेव उपाध्याय
- धर्म और समाज, डॉ0 राधाकृष्णन
- भारतीय संस्कृति में धर्म व दर्शन, प्रो0 शिवदत्त ज्ञानी
- मतंग मुनि कृत वृहद्देशी, श्लोक 791
- पं० शारंगदेव, संगीत रत्नाकर श्लोक 3
- शांरगदेव कृत संगीत रत्नाकर, प्रथम स्वराध्याय, श्लोक 30

संदर्भ

1. वर्मा, रामचन्द्र. (सम्पादन). मानक हिन्दी कोश, भाग–3, पृष्ठ 158.
2. वहीं, पृष्ठ 158.
3. मतंग मुनि कृत वृहद्देशी, श्लोक 17, पृष्ठ 2.
4. देव, पं० शारंग. संगीत रत्नाकर श्लोक 3, (स्वराध्याय) पृष्ठ 64.
5. वर्मा, रामचन्द्र. मानक हिन्दी कोश – पांचवा खण्ड पृष्ठ 213.
6. याज्ञवल्क्य, आचार्य. "याज्ञवल्क्यस्मृति" पृष्ठ
7. शास्त्री, के. वासुदेव. संगीत शास्त्र पृष्ठ 2.
8. शर्मा, पं० राम जी. (अनुवादक). शिव मापुराण – (सातवां खण्ड), पृष्ठ 420.
9. शर्मा, पं० राम जी. (अनुवादक). शिव महापुराण. पृष्ठ 15.